

हिन्दी कथा साहित्य में भारतीय ग्यान परंपरा

डा. सुधामणि.एस.

सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

सरकारी रामनारायण चेल्लाराम वाणिज्य तथा प्रबंध महाविद्यालय,
रेस कोर्स रोड, बेंगळूरु. 560001

प्रस्तावना: हिन्दी कथा साहित्य में भारतीय ग्यान परंपरा का महत्वपूर्ण स्थान है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों और दर्शन से प्रेरित होकर नैतिकता, आध्यात्मिकता, दार्शनिकता और सामाजिक मूल्यों की रक्षा करती है। यह परंपरा ईश्वर भक्ति, सूफि प्रेम और नैतिक बोध के माध्यम से जीवन को संतुष्ट बना दिया है। हिन्दी कथा साहित्य, भारतीय परंपरा (वेद, पुराण, दर्शन, लोकग्यान) का आधुनिक रूप है। आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ वेद, उपनिषद, पुराण, और रामायण-महाभारत के दर्शन, नीति, आध्यात्मिक मूल्यों तथा सामाजिक नैतिकता को कथा के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाना है। यह परंपरा कबीर के संत साहित्य से लेकर प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानियों और आधुनिक साहित्य तक, नैतिक मूल्यों, समाज सुधार, और भारतीय अस्मिता के रूप में निरंतर प्रवाहमान है।

बीजक शब्द : साहित्य, नैतिकता, आध्यात्मिकता, दर्शन शास्त्र, आधुनिक साहित्य

हिन्दी कथा साहित्य- हिन्दी कथा साहित्य आधुनिक काल (19वीं सदी के अंत) में पाश्चात्य और लोक कथा परंपरा के प्रभाव से विकसित हुआ। इसमें उपन्यास और कहानी प्रमुख विधाएँ हैं, जो सामाजिक, यथार्थवादी और मनोवैज्ञानिक विषयों को दर्शाती हैं। प्रेमचंद ने इसे यथार्थ से जोड़कर उन्नत शिखर तक पहुँचाया, प्रसाद ने उसे भावनात्मक गहराई दी। यह विधा, मानव जीवन की विविधता को प्रस्तुत करती है। हिन्दी कथा साहित्य के अंतर्गत गद्य की दो विधाओं का अध्ययन किया जाता है, उपन्यास और कहानी। इसके अंतर्गत छात्रों को उपन्यासों और कहानियों के संदर्भ के अनुसार जोड़कर पढ़ने का प्रयास किया जाता है तथा कुछ प्रमुख रचनाकारों तथा रचनाओं से अवगत करने का प्रयास किया जाता है।

हिन्दी कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों में यथार्थवाद, मनोविश्लेषण, प्रगतिवाद और समकालीन का बोध प्रमुख हैं, जो प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से लेकर आज के महानगरीय जीवन की जटिलताओं, अस्तित्व-बोध, स्त्री विमर्श और दलित चेतना को दर्शाती हैं। ये कहानियाँ समाज के बदलते हुए मूल्यों, मध्यमवर्गीय जीवन, और मानवीय संवेदनाओं को यथार्थ के धरातल पर चित्रित करती हैं।

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में कथा साहित्य जो ऐसी दो विधाएँ हैं जिसके द्वारा साधारण मानव भी अपनी मन की भावनाओं एवं चेतनाओं को

व्यक्त कर सकता है। कथा साहित्य, मानव जीवन की साधारण अभिव्यक्ति है। कथा साहित्य, मानव जीवन का संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। हिन्दी कहानी और उपन्यास का विकास आधुनिक काल में ही हुआ। हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा लगभग सौ वर्षों की यात्रा माना गया है जिसमें बहुत तेज गती से नये परिवर्तन होते रहे हैं। उसकी विकास-गति तीव्र और अपने समय-संदर्भों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी रही है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि हिन्दी कहानी ने बहुत कम समय में एक श्रेष्ठ साहित्यिक विधा का रूप प्राप्त कर लिया। इसका प्रमुख कारण यह है कि आरंभ में ही कुछ महत्वपूर्ण रचनाकारों ने अपनी प्रतिभा से उसे (हिन्दी कहानी) प्रारंभिक दौर की लड़खड़ाहट और अनगढ़पन से मुक्त कर दिया। हिन्दी कहानी के उदयकाल में ही श्रेष्ठ रचना का प्रकाशित होना एक महत्वपूर्ण विषय है। इसने आगे के कहानीकारों के लिए उत्कृष्ट कहानी की रचना के लिए एक चुनौती प्रस्तुत कर दी। हिन्दी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ उसके 1000 वर्षों के क्रमिक विकास (आदिकाल से आधुनिक काल) को दर्शाती हैं, जिसमें मुख्य रूप से भक्ति-भावना, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार, प्रकृति चित्रण, और समन्वय की प्रवृत्ति प्रमुख है। यह भाषा (ब्रज, अवधी, खड़ीबोली), श्रृंगार और वीर रस के मिश्रण के साथ मानवीय संवेदनाओं को उजागर करता है।

हिन्दी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ : समन्वय और भक्ति भावना: भारतीय साहित्य के मूल भावना है, जो ज्ञान, भक्ति और कर्म को जोड़ती है। भक्तिकाल में सगुण और निर्गुण ईश्वर की उपासना के साथ गुरु का महत्व दर्शाया गया है।

राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार: आधुनिक काल में राष्ट्रप्रेम, स्वाधीनता आंदोलन, और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जन-जागरण का स्वर का मुखरित हुआ। वीर और श्रृंगार रस (आदिकालीन विशेषता): आदिकाल में राजाओं की प्रशंसा (रासो काव्य) में वीर रस और श्रृंगार रस का सजीव चित्रण प्रमुख था।

प्रकृति चित्रण: साहित्य में प्रकृति का स्वतंत्र और मानवीय रूप में (छायावाद) सुंदर वर्णन मिलता है।

भाषाई विकास (ब्रज से खड़ीबोली): मध्यकाल में ब्रज और अवधी की प्रधानता थी, जबकि आधुनिक काल में खड़ीबोली हिन्दी प्रमुख साहित्य भाषा बनी।

विविधता और यथार्थवाद: छायावाद में वैयक्तिकता और प्रेम, प्रगतिवाद में शोषितों की आवाज, और प्रयोगवाद में नवीन प्रयोगों के साथ समकालीन साहित्य में यथार्थवाद (वास्तविक जीवन) को प्रमुखता मिली है।

भारतीय ज्ञान परंपरा: भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों पुरानी एक समृद्ध, निरंतर प्रणाली है, जो वेदों, उपनिषदों, पुराणों, और योग-आयुर्वेद, गणित शास्त्र, खगोल विज्ञान, जैसे विभिन्न शास्त्रों पर आधारित है। यह ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म, नैतिकता, दर्शन और कला का मिश्रण है, जिसका मुख्य उद्देश्य समग्र मानव कल्याण और सतत विकास करना है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के मुख्य स्तंभ: वैदिक साहित्य (वेदों का ज्ञान): वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) को भारतीय ज्ञान का मूल आधार माना जाता है।

विज्ञान और तकनीक: प्राचीन काल में आयुर्वेद, खगोलशास्त्र (ज्योतिष), गणित, वास्तुकला (शिल्पशास्त्र), और धातु विज्ञान का उद्भव तथा विकास हुआ।

साहित्य और कला: रामायण, महाभारत, पुराण, और कालिदास जैसे महान कवियों की रचनाएँ, जो जीवन के मूल्य और सांस्कृतिक चेतना को दर्शाती हैं।

योग और साधना: महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित योग परंपरा, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

गुरु-शिष्य परंपरा: ज्ञान के हस्तांतरण की अनूठी प्रणाली, जहाँ ज्ञान मौखिक और व्यावहारिक रूप से पीढ़ियों तक पहुँचाया गया।

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ:

सर्वसमावेशी : यह लौकिक (भौतिक) और पारलौकिक (आध्यात्मिक) ज्ञान में समन्वय की स्थापना की है।

कल्याणकारी दृष्टिकोण: 'वसुधैव कुटुंबकम्' (पूरी दुनिया एक परिवार है) के दर्शन पर आधारित है।

अनुभव और अन्वेषण: यह परंपरा केवल पुस्तकीय नहीं, बल्कि अनुभव, अवलोकन, और प्रयोग या अन्वेषण पर आधारित है।

वैज्ञानिकता: इसमें प्राकृतिक विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की अवधारणा प्राचीन काल से ही मौजूद है।

हिंदी कथा साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा : हिंदी कथा साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का अर्थ है वेदों, उपनिषदों, पुराणों और दर्शन से निकले शाश्वत मूल्यों का आधुनिक कहानियों में समावेशन। यह परंपरा त्याग, नैतिकता, सत्य और मानवीय संवेदनाओं को लोकभाषा में प्रस्तुत करती है, जो प्रेमचंद, प्रसाद से लेकर समकालीन कथाकारों तक पात्रों के माध्यम से भारतीय जीवन-दर्शन को दर्शाती है।

हिंदी कथा साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएँ

मूल्य-आधारित चिंतन: प्रेमचंद की कहानियों में 'पंच परमेश्वर' जैसी रचनाओं में धर्म, न्याय, और नैतिकता की भारतीय परंपरा स्पष्ट चित्रण हुआ है।

दार्शनिक और सांस्कृतिक गहराई: जयशंकर प्रसाद ने अपनी कहानियों में भारतीय इतिहास, दर्शन और संस्कृति का समन्वय किया है।

त्याग और आत्मिक विकास: भारतीय ज्ञान परंपरा त्याग भावन पर ध्यान दिया है, जो कथाओं में पात्रों के संघर्ष और आत्म-शुद्धि के रूप में व्यक्त हुआ है।

मानवतावाद: रामकाव्य और अन्य साहित्य के माध्यम से मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने और समाज को एक सूत्र में बांधने का संदेश कथाओं में प्रमुख रूप से प्रचलित हैं।

लोक-चेतना: मध्यकालीन संत परंपरा से लेकर आधुनिक कथाओं तक, ज्ञान को जनभाषा में लाकर उसे समाज के जन समुदाय तक पहुँचाया गया है।

निष्कर्ष : हिंदी कथा साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा, सदियों से सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिकता, योग, और दर्शन का संरक्षक रही है। कथा साहित्य ने वेद-पुराणों के जटिल ज्ञान को जनसाधारण भाषा में सुलभ बनाकर सामाजिक समरसता, कर्तव्यबोध और आध्यात्मिक चेतना का संचार किया है। यह साहित्य केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि प्रेमचंद से लेकर आधुनिक लेखकों तक, सामाजिक यथार्थ और नैतिक पुनर्स्थापना का जीवंत माध्यम बना हुआ है।

संदर्भ सूची :

- 1) https://www.google.com/search?q=hindi+kataa+saahitya+&sca_esv=eb9bc99a534cb7d&rlz=C1G1GM_enI N973IN973&biw=1366&bih=580&sxsrf=ANbL-n4xmZnCo5FlyaWyMsKGILHhXuU
- 2) https://www.google.com/search?q=hindi+kataa+saahitya+&sca_esv=3eb9bc99a534cb7d&rlz=1C1G1GM_enI N973IN973&biw=1366&bih=580&sxsrf=ANbL-n4xmZnCo5FlyaWyMsKGILHhXu
- 3) https://www.google.com/search?q=hindi+kathaa+saahitya+ki+visheshataae++in+hindi&sca_esv=97954111f5c3aa31&rlz=1C1G1GM_enI N973IN973&sxsrf=ANbL-n7gJOBA4pr_itR0
- 4) https://www.google.com/search?q=bhartiya+gyan+parampara+in+hindi&sca_esv=97954111f5c3aa31&rlz=1C1G1GM_enI N973IN973&biw=1366&bih=580&sxsrf=ANbL-n7wRaa9hgE
- 5) https://www.google.com/search?q=hindi+kataa+saahitya+me+bhaaratya+gyaan+parampara+in+hindi&rlz=1C1G1GM_enI N973IN973&oq=&aqs=chrome.0.35i39i362i8.1547148j0j15&sourceid=chr